



॥ श्री अन्नपूर्णा माता पूजा विधि ॥
॥ ॐ अन्नपूर्णायै नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री अन्नपूर्णा माता पूजा विधि ॥

ॐ अन्नपूर्णायै नमः॥

माता अन्नपूर्णा, आदिशक्ति पार्वती का ही अन्न एवं पोषण प्रदान करने वाला दिव्य स्वरूप हैं। इनकी उपासना से घर में अन्न-धन की वृद्धि, सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य तथा परिवार में सदैव अन्न की पूर्णता बनी रहती है। अन्नपूर्णा माता की पूजा विशेष रूप से अन्नपूर्णा जयंती, नवरात्रि, शुक्रवार, सोमवार तथा किसी भी शुभ तिथि पर की जा सकती है।

पूजा सामग्री

माता अन्नपूर्णा की प्रतिमा या चित्र, लाल या पीला स्वच्छ वस्त्र चौकी एवं लाल/पीला आसन, गंगाजल, अक्षत (चावल), रोली, कुमकुम एवं हल्दी, चंदन, पुष्प एवं पुष्पमाला, धूप एवं दीपक (घी का दीपक) नैवेद्य (खीर, पूड़ी, हलवा, फल, गुड़, दूध, चावल या घर का सात्विक भोजन), पंचामृत, नारियल, सुपारी, लौंग, इलायची, कलश मौली (कलावा), दक्षिणा

पूजा की तैयारी

प्रातःकाल स्नान करके स्वच्छ एवं सात्विक वस्त्र धारण करें। पूजा स्थान को गंगाजल से शुद्ध करें। चौकी पर लाल अथवा पीला वस्त्र बिछाकर माता अन्नपूर्णा की प्रतिमा या चित्र स्थापित करें। समीप कलश स्थापित करें तथा उसमें जल, आम्रपल्लव (यदि उपलब्ध हों) और नारियल रखें।

पूजा विधि

1. गणेश वंदना

सबसे पहले भगवान श्रीगणेश का स्मरण करें—

ॐ गं गणपतये नमः॥

2. संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत एवं पुष्प लेकर संकल्प करें—
"मैं (अपना नाम) श्रद्धा एवं भक्ति के साथ माता श्री अन्नपूर्णा की पूजा कर रहा/रही हूँ। माता की कृपा से मेरे परिवार में अन्न, धन, सुख, स्वास्थ्य, शांति एवं समृद्धि सदैव बनी रहे।"

3. ध्यान

आंखें बंद करके माता का ध्यान करें—
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥

4. आवाहन

ॐ अन्नपूर्णायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि॥

5. पूजन

क्रमशः माता को अर्पित करें—
आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, चंदन, अक्षत, रोली-कुमकुम
पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, दक्षिणा

6. मंत्र जाप

निम्न मंत्र का कम से कम 108 बार जप करें—
ॐ ह्रीं श्रीं अन्नपूर्णायै नमः॥
या
ॐ अन्नपूर्णायै नमः॥

7. स्तोत्र पाठ

श्री अन्नपूर्णा अष्टकम्श्री, अन्नपूर्णा चालीसा, माता की आरती
का श्रद्धापूर्वक पाठ करें।

8. आरती

घी का दीपक जलाकर माता अन्नपूर्णा की आरती करें तथा पूरे परिवार के साथ आरती ग्रहण करें।

9. क्षमा प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।

दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥

हे माँ अन्नपूर्णा! मुझसे जाने-अनजाने में हुई सभी त्रुटियों को क्षमा करें और अपनी कृपा सदैव बनाए रखें।

10. प्रसाद वितरण

पूजा पूर्ण होने पर नैवेद्य माता को समर्पित करें और तत्पश्चात परिवारजनों एवं अन्य लोगों में प्रसाद वितरित करें। यदि संभव हो तो किसी भूखे, निर्धन या जरूरतमंद को भोजन अवश्य कराएं। अन्नदान माता अन्नपूर्णा की पूजा का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग माना गया है।

पूजा के विशेष नियम

पूजा के समय मन, वचन और कर्म की शुद्धता रखें।

सात्त्विक भोजन करें तथा क्रोध, असत्य और अपशब्दों से बचें।

भोजन का कभी अपमान न करें और अन्न का दुरुपयोग न करें।

अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्नदान अवश्य करें।

प्रतिदिन रसोई में भोजन बनने से पहले माता अन्नपूर्णा का स्मरण करें।

पूजा का फल

घर में अन्न और धन की कभी कमी नहीं रहती।

परिवार में सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है।

स्वास्थ्य, सौभाग्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

दरिद्रता और अभाव दूर होते हैं।

अन्नदान का पुण्य प्राप्त होता है।

माता अन्नपूर्णा तथा भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

समापन प्रार्थना

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥

ॐ अन्नपूर्णायै नमः॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

